अंतरा-शब्दशक्ति

ओस की बूंदे

काव्य संग्रह

सीता गुप्ता

ओस की बूँदे

(काव्य संग्रह)

सीता गुप्ता

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-21-6

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © सीता गुप्ता

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

‘Os ki bunde’ by 'Sita Gupta'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

समर्पण

मैं सीता गुप्ता (एम. हिन्दी, एम. ए. समाज शास्त्र, बी. एड.) सेवा निवृत्त वरिष्ठ शिक्षिका हूँ | मैंने अपनी सेवाएँ कुछ समय के. वी .बचेली, उसके पश्चात 1993 से2017तक

एन एम डी सी लिमिटेड -बी. आई. ओ. पी. सी. से. स्कूल किरन्दुल डिपा. 14(बैलाडीला छ.ग.) को समर्पित की हैं|

स्वाध्याय मेरे दैनिक जीवन का मुख्य अंग है, अच्छा पढ़ना साथ ही उस विषय पर चिंतन सहित आत्ममनन करना मेरी विशेष आदत है , यूँ तो मैंने लेखन कार्य स्कूल कॉलेज के समय से ही प्रारंभ कर दिया था| लेकिन ....बीच के दौर में सब अतीत की भांति छुप गया था, परंतु.. बाद में "कर्मभूमि बैलाडीला" क्षेत्र में लगातार होने वाली प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत होने के साथ ही वहाँ प्रकाशित पत्रिकाओं में मेरी रचनाओं के प्रकाशन ने "मेरे सूखते काव्य पेड़ को नई बारिश देकर पुन: पल्लवित कर दिया |" यही कारण है कि 1995 से वर्तमान तक लेखन क्षेत्र में जुड़ती चली जा रही हूँ |

कविता लिखना एवं सुनाना मुझे आत्मिक सुकून एवं बल प्रदान करता है| मैने बैलाडीला में समय -समय पर विभिन्न विषयों पर "स्लोगन, भाषण, कविता आदि में प्रथम -द्वितीय पुरस्कार पदस्थ "जी. एम. साहब" के कर -कमलों से प्राप्त किए हैं, जो मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहे हैं |

इस प्रकार बैलाडीला क्षेत्र से बढ़ती हुई आज women आवाज के माध्यम से अपनी कविताओं का गुलदस्ता "ओस की बूँदें" समाज को समर्पित कर सकूँगी, जो मेरे लाए सौभाग्य की बात होगी | यद्यपि लेखन कार्य हर समय नहीं कर पाती, लेकिन..फिर भी "जीवन की कोई बात, समाज की कोई घटना, प्राकृतिक बोध जब भी मन को छू जाता है , तो फिर कलम आधी रात को भी लिखने को बेचैन कर देती है|" और

तब..कुछ विशेष लिख जाता है जो एक नाम एक "शीर्षक "पाकर दिल को सुकून देता है|

मेरी विशेष उपलब्धियों में बैलाडीला में सड़क के किनारे लगा "पर्यावरण स्लोगन का प्रथम पुरस्कृत बोर्ड है, जिसमें मेरा नाम आज भी अंकित है| **"एक बूँद से सज़ता है, सीप में मोती |"**

इस बोर्ड ने वहाँ समाज के बीच पहचान और प्रशंसा तो दी ही थी साथ ही आगे बढ़ने के द्वार भी खोल दिए थे| जिस कारण आज मैं अपनी कविताओं द्वारा आपके समक्ष हूँ | अब बस ! ईश्वर से विनती करती हूँ कि उनके द्वारा दिए हुए हांथ से जब भी कुछ लिखे "वो समाज के लिए एक संदेश, एक सीख, एक प्रेरणा बन सके |"

सीता गुप्ता

अनुक्रमणिका

1. जागृति	**5**
2. पानी की आत्मकथा	**6**
3. सीख	**7**
4. संदेश प्रभात का	**8**
5. बेटी	**9**
6. मांझी	**10**
7. बेटी बनाम नारी	**11**
8. पहचान इस कलयुग की	**12**
9. जीवन की सार्थकता	**13**
10.रे! मेरे मन	**14**
11.गहरी सोच	**15**
12.धागे अपनत्व के	**16**

जागृति

वसुंधरा का आदर कर, पेड़ तुम लगाओ |
वो देंगे तुम्हें छाया, जब थककर तुम आओ |

इन पेड़ों की डाली पर, चिड़ियों के नीड़|
वो जगाती हैं तुमको सुना करके गीत |

न चलाओ कुल्हाड़ी, न उजाड़ो वे नीड़ |
तुम! बनाओ न अपने ही, सुख को गमगीन |

न काटो वो डाली, न गिराओ वो पत्ता |
वो बचाते हैं जीवन, जो देता है दाता |

ये पेड़ हमारे हैं, सदियों के साथी |
इस धरा पर जो जीवन, ये इसके हैं साक्षी |

इनसे हमारा-तुम्हारा है नाता,
ये ही तो साँसो के जीवन दाता |

चलो! आज मिलकर इन्हें हम बचाएँ,
हम भी तो इनसे अपना रिश्ता निभाएँ |

पानी की आत्मकथा

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बर्फ रूप में मैं ही हूँ |
देख! धरा पर झिलमिल करता, "बूँद ओस की" मैं ही हूँ |

नदियों और सागर में जाकर, लहर रूप में मैं ही हूँ |
घर-घर की सुंदर गगरी में, "मीठा पानी" मैं ही हूँ |

ड्राइंग रूम के अक्वेरियम में, मछली जीवन मैं ही हूँ |
नन्हों संग अठखेली करता, छप -छपाता मैं ही हूँ |

इस धरा से मेरा नाता, सदियों-सदियों तक का है
हम दोनों पर्याय हैं दूजे, यही हमारा वादा है |

वसुंधरा पर जो हरियाली, वही मेरी खुशहाली है |
कंक्रीटों के जंगल में तो, दुनिया मेरी खाली है |

"नूर आँख का" हूँ तुम्हारी, अधरों की मुस्कान हूँ |
प्राणी-जगत है सारा मुझसे, "स्वयं की पहचान हूँ | "

सीख

कहा रहीम ने एक दिन मानव, बिन पानी सब सून|
आज भी घड़ियाँ कहती सारी, मोती जल की बूँद |

अंबर से जो धरा पर आई, अमृत थी वह बूँद |
हाहाकार मची अब जग में, कैसे? बचे वो बूँद |

आँख का अंधा हो गया मानव, रहा आँख वह मूँद |
व्यर्थ गंवाया उसने जल को, बचे कहाँ से बूँद ?

समय पकड़ ले अब भी मानव, चुन ले मोती बूँद |
बूँद -बूँद से गगरी भर ले, "अमृत है ये बूँद "|

संदेश प्रभात का

घोर निशा का दामन, अब कहीं खो गया |
दूर पूरब में जो, अब चमन खो गया ||

बेला ऊषा की आई, चमन जग गया |
सारा जग अपने कामों में, अब लग गया |

चहचहाती वो चिड़िया भी, अब उड़ चली |
अपने बच्चों के भोजन को, लेने चली ||

गगरी सर पे धरे. देखो गोरी चली |
पानी पनघट से लेके, वो घर को चली ||

लहलहाती हुई फसलें, सबका भोजन बनी |
इस सारे जगत की हुई, खुशियाँ घनी ||

बैर-भाव की जब, ना तलवारें तनी |
तब अमन शांति, इस जगत में बनी ||

बेटी

खुशियों की सौगात होती है बेटी |
होती है रौनक जहाँ होती बेटी ||

स्नेह और प्यार की मूरत है बेटी |
पर अपनत्व की कमी हो तो रोती है बेटी ||

यूँ तो रत्न बहुत हैं पर अनमोल है बेटी |
इस सारे जहाँ की कीमत है बेटी ||

अगर बेटा दीपक तो ज्योति है बेटी |
दोनों कुलों की लाज निभाती है बेटी ||

है पराया जो धन ऐसी संपत्ति बेटी |
एक धरोहर सी वो अमानत है बेटी ||

है राखी की कीमत जब होती बेटी |
है दिवाली की रौनक जब बहू बनती बेटी ||

दू कितनी रहे पास होती है बेटी |
सूना रहता जहाँ जो होती न बेटी ||

माझी

नहीं मानती मैं अपने को, बिन पतवार का माझी |
तूफाने मंजर में भी तो, कश्ती पार लगाती ||

मन विश्वास का चप्पू लेकर,आगे ही तो बढ़ती |
बीच भंवर जो आ जाए तो, बचकर कूल पहुँचती ||

नौका पर जो बैठ मुसाफिर, मुझको है घबराता |
उसके कर्मों के कारण फिर, जीवन डगमगाता ||

पर विश्वास की डोर थाम मैं ,सच्ची नाविक बनती ,
ले पतवार फिर सही दिशा में, आगे बढ़ती जाती ||

मन कमजोर जो होता मेरा, आँखें छल -छल करती |
न जाने किस कर्म की फिर मैं, थोड़ी सजा भुगतती ||

पर कमजोर नहीं पड़ती मैं, विनती ईश से करती |
सबको माफी देदे प्रभु तू, शीश उन्हें झुकाती ||

"कान्हा "भी जब फिर मुस्काता, मन मेरा रम जाता |
काली रात का घना अंधेरा, "नया सूरज" ले आता ||

देख लालिमा सूरज की फिर, जीवन सफल हूँ करती |
बिन पतवार नहीं माझी मैं, फिर दुनिया से कहती ||

बेटी बनाम नारी

बिटिया तो चिड़िया जैसी है, कल दूर देश चली जाएगी |
पर मान से जब बुलाओगे, तो दौड़ी -दौड़ी आएगी ||

कभी दुख की बदली जब आए, तब बिना बुलाए आएगी |
फिर स्नेह-प्यार की गंगा से, वो दुख को दूर भगाएगी ||

उसकी मनमोहक हँसी से, खुशियों की कलियाँ महकेंगी |
जब बेटी बाबुल के घर में, अपनी मुस्कान बिखेरेगी ||

राखी-तीजा त्यौहार रहें, बेटियाँ याद ही आएंगी ||
वो दूर विदेश भी जाकर के, दिल से रिश्ते निभाएगी ||

इस धरा पर बेटी ऐसी है, जो बेटी बहुआ माँ भी है |
इस सृष्टि को नया रूप देने, ये नारी ही सहभागी है ||

ये नारी भी तो बेटी है, जो प्यारी चिड़िया जैसी है|
वो दूर आसमान छूने को, अपनी उड़ान फिर भरती है ||

उसकी ऊँची उड़ान में तुम, मानव! पंखों की ताकत दो |
एक भाग तुम भी सृष्टि के, नर !नारी का सम्मान करो ||

पहचान इस कलयुग की

अनाचार, व्यभिचार, चोरी -डकैती,
बलात्कार, लूट-पाट स्थिति समाज की |
सतयुग से कलयुग तक पाटों के बीच की,
बढ़ती गई दूरी समय के पहिए की ||
असुरक्षित भी सबला आज,
पशुत्व के भूख की |
जरूरत है जगत को,
किसी एक कृष्ण की ||
रोते हैं मासूम भूख से बिलखते,
बहाते हैं आँसू बूढ़े दर्द को सहते |
बाजार में उतर नारी दर्द को सहती,
अपने ही हांथों मानो गला दबाती ||
बिखर रहे घरौंदे और टूट रहे सपने,
अपनों के बीच न रह पाए अपने |
स्वार्थ है धोखा है फरेब है जहाँ में |
इंसान ही सच्चा नहीं, इंसानियत कहाँ है?
शायद यही कलयुग है,
जो "सुरसा" सा बढ़ रहा,
इसीलिए मानव शीघ्र काल के मुँह जा रहा ||

जीवन की सार्थकता

केवल मृत्यु के भय से तू ! मंदिर कभी न जाना |
मन -मंदिर में पूजा करके, देवों को रिझाना ||

सही कर्म के फूल को चुनकर, देवों तक पहुँचाना |
उनके आशीषों को पाकर, शुभ घड़ी ले आना ||

बेबश लाचारों के आँसू, गिरने कभी मत देना |
एक आस का दीपक बनकर, तम को दूर भगाना ||

उस दीपक की लौ प्रकाश में, देख सही तुम लेना |
अपने दरवाजे फिर तुम खुद, खड़े देव को पाना ||

उनका आशीष पाकर फिर तुम, जनम सफल कर लेना|
मानव जीवन तुमने पाया, इसे सार्थक करना ||

रे! मेरे मन

स्वाभिमान को मत तू खोना,
अभिमानी मत बनना तू !

राह सरल हो या कठिन हो,
नादानी मत करना तू |

बीच भंवर जो आ जाए तो,
उससे बच निकलना तू |

काँटे तेरे पग-पग होंगे,
दूर उन्हें कर लेना तू |

सभी अपने और गैर सभी हैं,
सही समझ जो पाया तू |

अति विश्वासी बन करके,
विश्वास मत खो देना तू |

श्रम बिंदु ही सब कुछ देती,
बढ़ तकदीर को लिख ले तू |

"मंजिल" तेरी राह देख रही,
कदमों निशां बना दे तू !

गहरी सोच

जग में जाहिर कुछ ही होते, कुछ ही गुंबद बनते है |
पर अधिकांश तो नींव के पत्थर, बंद घुटन को सहते हैं ||

नींव के पत्थर जो होते हैं, मीनार खड़ी वह करते हैं |
मीनारों के भार तले फिर, खुद के आँसू पीते हैं ||

कौन? भला फिर कहाँ हैं कोई, ये आँसू देख जो पाता है |
नींव के पत्थर की घुटन को, कौन अनुभव कहीं करता है ||

विरला ही होता है जग में, "गहरी सोच" जो रखता है |
गुंबद की तुलना में जो फिर, नींव याद कर पाता है ||

कुछ इंसा की किस्मत भी तो, नींव का पत्थर होती है |
गुंबद मीनारों की ऊँचाई, उसे कहाँ मिल पाती है ||

तकदीरों के खेल निराले, देख वो इंसा रहता है |
अपनी संतानों की खातिर, नींव का पत्थर बनता है ||

धागे अपनत्व के

आशीषों की बढ़ती छतरी, जब सिर पर तनती जाती है |
दूर खड़ी तब कोई मुसीबत, पास नहीं आ पाती है ||

मात-पिता की दुआएँ जब, सिर पर हांथ फिराती हैं |
बड़ी-बड़ी मुश्किलें भी फिर तब, झुककर राह बदलती हैं ||

बहना की राखी जब दिल से, हांथो पर बंध जाती है |
आ-आकरके सारी खुशियाँ, द्‌वारे दस्तक देती हैं ||

भाई-भाई के हाथ मिले तो, ताकत बढ़ती जाती है |
भाई-बहन के काम आए तो, खुशियाँ रंग ले आती हैं ||

इंसानी रिश्तों की खुशबू , जग में बड़ी निराली है |
इसीलिए तो मन-मानस में, "छवि ईश की "प्यारी है ||

धागे जब अपनत्व भरे ये, आगे बुनते बढ़ते हैं ,
सारी प्रकृति में तब मानव, कृपा प्रभु की पाते हैं ||

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती सीता गुप्ता

माता - श्रीमती त्रिवेणी सरावगी

पिता - स्व.श्री ललता प्रसाद सरावगी

जन्म - 25.05.1957, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (समाजशास्त्र), बी.एड.

पता - सीता गुप्ता, सी/ओ. आर.के.गुप्ता, जिप्सी-1, गणपति विहार, पोटिया कला रोड 'दुर्ग', जिला- दुर्ग (छ.ग.)

मो.नं. - 08839445051

ई मेल - rksitagupta@gmail.com

विधा - काव्य लेखन

कार्यक्षेत्र - सेवा निवृत्त वरिष्ठ शिक्षिका एन.एम.डी.सी. लिमिटेड (बी.आई.ओ.पी.सी. से. स्कूल), किरन्दुल (छ.ग.)

प्रकाशन - एन.एम.डी.सी. लिमि.- बैलाडीला, लौह अयस्क खान, किरन्दुल कॉम्लेक्स की 'सर्जना'पत्रिका में रचनाएं प्रकाशित, लक्ष्मी पब्लिकेशन की 'कुछ शिक्षक कवि-2' में रचना प्रकाशित एवं लोकजंग में रचना प्रकाशित हूई।

सम्मान - बैलाडीला क्षेत्र में इंटुक यूनियन द्वारा 'बेस्ट टीचर्स' अवार्ड एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष 2016 के कार्यक्रम में बैलाडीला यूनियन एस.के.एम.एस. द्वारा विशेष सम्मान।

उपलब्धि - पर्यावरण स्लोगन, प्रथम पुरस्कार पुरस्कृत बोर्ड के नाम के साथ बैलाडीला में मुख्य सड़क के किनारे आज स्थापित है। - एक बुंद से सजता है, सीप में मोती ।

उद्देश्य - समाज को प्रकृति बोध एवं वर्तमान परिवेश में सम-विषम परिस्थितियों के बीच विसंगतियों के कारण विचलित मानव मन को एक सकारात्मक सोच के साथ सहीं दिशा देने का प्रयास अपनी रचनाओं के माध्यम से कर रही हूँ।

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-21-6

मूल्य 40/-

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com